

हियेशिमा और परमाणु हमला



➤ हियेशिमा दिवस :

- प्रत्येक वर्ष 6 Aug को जापान परमाणु हमले की दुखद सालगिरह को याद करने के लिए “हियेशिमा दिवस” मनाता है।
- 6 Aug 1945 को हियेशिमा शहर पर “लिटिल बॉय” (Little Boy) नामक परमाणु बम गिराया गया था, जिसमें तत्काल 70-80000 लोग मारे गए थे, जबकि इसके द्वारा उत्सर्जित रेडिएशन का प्रभाव 8 दशक बाद भी देखा जा सकता है।
- WW-II के अंतिम चरण में मिग्राष्ट्र की तरफ से USA ने यह बम जापानी शहर पर गिराया था।
- हियेशिमा हमले के तीन दिन बाद ही 9 Aug 1945 को “Fat man” नामक दूसरा बम जापान के एक अन्य शहर नागासाकी पर गिराया गया था।

➤ प्रथम प्रयोग :

- WW-II के दौरान मानव जाति के इतिहास में सामूहिक विनाश के लिए पहली बार इस हमले के दौरान रेडियोधर्मी तत्वों के विखंडन गुणों का प्रयोग किया गया था।

- यह घटना सितम्बर 1939 में जर्मनी (हिटलर) द्वारा पोलैण्ड पर आक्रमण के साथ शुरू हुए WW-II का भयावह अंत था।
- WW-II को व्यक्तित्व एवं विचारधाराओं के बीच टकराव के लिए जाना जाता है।
- जर्मनी में एडोल्फ, हिटलर, पुर्तगाल में एंटोलियो सालाजार, इटली में बेनितो मुसोलिनी, जापान में हिदेकी तोजो, अर्जेन्टीना में जुआन पेरोन और स्पेन के फ्रांसिस्को फ्रैंको ने तानाशाही शासन को बढ़ाते हुए धुरी राष्ट्रों का गठन किया।
- वहीं मित्र राष्ट्रों में USA, USSR, ग्रेट ब्रिटेन एवं फ्रांस शामिल थे।
- धुरी राष्ट्र जहाँ निरंकुश अधिनायकवादी तानाशाही शासन का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, वहीं मित्र राष्ट्र आत्मनिर्णयवाद, सरकार के लोकतांत्रिक-स्वरूप एवं नस्लवाद विरोधी आधुनिक जगत की गई संवेदनाओं के पक्षधर थे।
- धुरी राष्ट्रों के दो मजबूत देशों ने पहले ही आत्मसमर्पण कर दिया था, ऐसे में जापान पर परमाणु बम का इस्तेमाल किया जाना वर्तमान समय में भी ज्वलंत सवाल बना हुआ है।
- इटली ने सितम्बर 1943 में जबकि जर्मनी ने मई 1945 में ही आत्मसमर्पण कर दिया था।

➤ परमाणु बम VS पर्ल हार्बर हमला :

- USA द्वारा जापान पर परमाणु बम-हमला का प्रमुख कारण कई विशेषज्ञ जापान द्वारा USA नेवल बेस पर्ल- हार्बर पर किया गया भीषण वायु-हमला को बताते हैं।
- पर्ल- हार्बर बंदरगाह USA के हवाई द्वीप में होनोलूलू से महज 10 km उत्तर-पश्चिम में स्थित USA का विकसित बंदरगाह एवं नौसेना-अड्डा था, जहाँ USA के सैकड़ों जहाज रुके हुए थे।
- 7 Dec 1941 की सुबह जापानी इंपीरियल एयरफोर्स के 353 लडाकू विमानों ने ओहू द्वीप पर स्थित पर्ल-हार्बर पर अचानक हमला किया।
- इस हमले में USA के सैकड़ों विमान ध्वस्त हो गए एवं 2404 USA के सैन्यकर्मी तथा सामान्य नागरिक मारे गए।
- इसी हमले ने USA की WW-II में समर्पित होकर भाग लेने के लिए बाध्य किया।
- जापान ने पर्ल-हार्बर पर आक्रमण के बाद USA द्वारा अधिकृत फिलीपींस, ब्रिटेन द्वारा अधिकृत मलाया, हांगकांग तथा सिंगापुर पर भी वर्चस्व स्थापित कर लिया।
- 1945 की शुरुआत में USA एवं जापान के बीच कई बड़ी जंग हुई।
- Feb 1945 में USA ने इवो जीमा नामक जापानी द्वीप पर हमला कर अधिकार में ले लिया, जिस दौरान लगभग 30,000 लोग मारे गए।
- April 1945 में USA ने ओकिनावा पर कब्जा कर लिया, जिस दौरान दोनों पक्षों से लगभग 50,000 लोग मारे गए।
- इस दोनों युद्ध के बाद जापान की वायु सेना एवं नौसेना ताकत लगभग ध्वस्त हो गई थी।

- इस दौरान USA ने परमाणु बमों का प्रयोग संभवतः इसलिए नहीं किया था क्योंकि मैनहट्टन परियोजना अभी तक पूर्ण नहीं हुआ था।

➤ मैनहट्टन परियोजना :

- WW-II के दौरान परमाणु बम बनाने की परियोजना का नाम ही मैनहट्टन परियोजना था।
- इस परियोजना में USA, UK एवं कनाडा शामिल थे।
- इस परियोजना के वैज्ञानिक निदेशक रॉबर्ट ओपेनहाइमर के, जिन्हें परमाणु बम के जनक के रूप में भी जाना जाता है।
- 10 जुलाई 1945 की सुबह न्यू मैक्सिको में स्थित अलामोगोर्दो व्हाइट सैंड्स मिसाइल रेंज में रॉबर्ट ओपेनहाइमर ने भगवद्गीता का हवाला देते हुए कहा – “अब मैं मृत्यु का बन गया हूँ”।
- यह पंक्ति उन्होंने प्लूटोनियम आधारित ‘गैजेट’ नामक परमाणु बम के सफल परीक्षण के बाद कहा था।

➤ पोट्सडैम घोषणा :

- मैनहट्टन परियोजना की सफलता ने अमेरिकी सैन्य क्षमता को अत्यधिक शक्तिशाली बना दिया।
- अब USA ने सहयोगियों के साथ यह विचार करना शुरू किया कि नए हथियार (परमाणु बम) का इस्तेमाल कैसे किया जाए।
- 26 जुलाई को विंग-3 एलाइड फोर्सेस (USA, USSR, UK) जर्मनी के पोट्सडैम शहर में सेसिलीनहोफ पैलेस में एकत्र हुए।
- विचार-विमर्श के बाद कई विकल्पों पर ध्यान दिया गया, जिसमें टोकियो के पास न्यून नुकसान के साथ बम का प्रदर्शन करना एवं ओलांपिया (जापानी द्वीप) पर अक्टूबर 1945 में पूर्ण पैमाने पर हमला करना शामिल था।
- यह विचार तात्कालिन USA राष्ट्रपति हैरी ट्रूमैन के विचारों से विभावित था।
- ट्रूमैन ने WW-I में हिस्सा लिया था एवं सैनिक के रूप में उन्होंने फ्रांस में कठोर कष्ट सहा था।
- WW-II में ट्रूमैन ने अपने बेटों एवं भतीजों को खो दिया था।
- ट्रूमैन के दिमाग में USA के पूर्व राष्ट्रपति रूजवेल्ट की बात भी थी, जिसमें उन्होंने बिना शर्त पूर्ण आत्मसमर्पण की बात की थी।

➤ जापान की प्रतिक्रिया :

- जापान पोट्सडैम घोषणा के प्रति उदासीन बना रहा, जिसके बाद काफी मंथन के बाद ट्रूमैन प्रशासन ने 3 Aug 1945 के बाद किसी भी समय परमाणु हथियारों के प्रयोग किए जाने का आदेश दिया।

- अंततः 6 Aug और 9 Aug 1945 को जापान को दो भीषण और अब तक का सबसे भयावह हमला झेलना पडा।

➤ Little Man :

- 4400 kg वजनी,
- Uranium-235 यानि U-235 आधारित,
- विस्फोटक के रूप में 1500 kg TNT के बराबर क्षमता, 64 kg U-235 इसमें भरा था।
- एनोला गे नामक विमान, जिसके पायलट पॉल टिवेट्स थे, के द्वारा गिराया गया।
- विस्फोट होते ही हिरोशिमा का तापमान 5 लाख Celcius हो गया था।

➤ Fat Man :

- Mark III के नाम से भी प्रसिद्ध,
- प्लूटोनियम आधारित परमाणु बम,
- वजन 4700 kg,
- 2100 kg TNT से होने वाले विस्फोट की क्षमता,
- बोइंग B-29 सुपर फोर्टेस नामक विमान, जिसके पायलट मेजर चार्ल्स स्वीनी थे, द्वारा नागासाकी पर गिराया था।

➤ हाइड्रोजन बम VS परमाणु बम :

- हाइड्रोजन बम नाभिकीय संलयन प्रक्रिया पर आधारित है, जो अनियंत्रित होती है।
- इसके तहत दो हल्के परमाणु नाभिक जुड़कर एक भारी परमाणु बनाते हैं, जिसमें भारी ऊर्जा विमुक्त होती है।
- परमाणु बम अनियंत्रित परमाणु विखंडन प्रक्रिया पर आधारित होता है।
- इसमें एक न्यूट्रॉन का विखंडन होता है, जो क्रमिक रूप से आगे बढ़ता जाता है, जिसे 'Chain Reaction' भी कहा जाता है।

Note :- सूर्य में ऊर्जा का स्रोत नाभिकीय संलयन है।

➤ परमाणु निरस्त्रीकरण :

- UN के रिपोर्ट के अनुसार वर्तमान में दुनिया भर में 13,400 परमाणु हथियार,
- अलग-अलग देशों द्वारा अब तक 2000 परमाणु परीक्षण,
- परमाणु निरस्त्रीकरण के लिए UN महासभा द्वारा 1946 में एक आयोग की स्थापना के बाद कई वैश्विक संगठन इस दिशा में प्रयासरत,

- NPT (परमाणु अप्रसार संधि), CTBT (परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि, जिसे 1963 में अपनाया गया था, लेकिन अब तक लागू नहीं हुआ है) एवं TPNW (परमाणु हथियारों के निषेध पर संधि) निरस्तीकरण के लिए अहम संधि
- CTBT को वायु, जल एवं अंतरिक्ष में परमाणु परीक्षण पर प्रतिबंध लगाने वाला संधि कहा जाता है।

➤ भारत का रुख :

- भारत एकमात्र ऐसा परमाणु संपन्न देश है, जिसका मानना है कि परमाणु मुक्त संसार में देशों की सुरक्षा ज्यादा बेहतर तरीके से सुनिश्चित होगी।
- NPT, जो 1968 में हस्ताक्षरित एवं 1970 में लागू हुआ, सिर्फ 5 देशों – UK, USA, रूस, चीन और फ्रांस को ही परमाणु संपन्न राष्ट्र मानता है।
- भारत अगर NPT पर साइन करता है तो यह भारत को गैर-परमाणु हथियार वाले देश के रूप में मान्यता देगा, जो भारत के अखंडता, सुरक्षा एवं संप्रभुता के खिलाफ है।
- भारत किसी प्रतिबंध का हस्ताक्षरकर्ता नहीं है, लेकिन वह स्वयं एकतरफा परमाणु परीक्षण पर स्थगन का रुख अपनाए हुए है और आगे परीक्षण करना भारत का स्वैच्छिक मामला है।

➤ SIPRI की रिपोर्ट (2024) :

- स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट दुनियाभर में परमाणु हथियारों के संबंध में प्रत्येक वर्ष रिपोर्ट जारी करता है।
- SIPRI के अनुसार सभी 9 परमाणु संपन्न देशों ने परमाणु हथियारों का आधुनिकीकरण किया है।
- NPT के 5 देशों के अलावा भारत, पाकिस्तान, इजरायल एवं उत्तर कोरिया के पास परमाणु हथियार हैं।
- कथित तौर पर ईरान के पास भी परमाणु हथियार की संभावना जताई जाती है, लेकिन इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है।
- जनवरी 2024 तक दुनिया भर में 12121 परमाणु हथियार थे, जिसका 90% संयुक्त रूप से USA एवं रूस के पास है।
- इस रिपोर्ट के अनुसार रूस एवं USA के अलावा ऐतिहासिक रूप से पहली बार चीन ने संयुक्त रूप से 2100 परमाणु वारहेड को हाई ऑपरेशनल अलर्ट पर रखा है।
- सर्वाधिक रूस (5900) एवं USA (5500) के बाद चीन 500 परमाणु हथियारों के साथ तीसरे नंबर पर है।
- चीन सबसे तेजी से अपने परमाणु हथियार भंडार को बढ़ा रहा है।
- इजरायल प्लूटोनियम आधारित परमाणु बम क्षमता बढ़ा रहा है।
- भारत के पास पाकिस्तान के 170 परमाणु हथियार से ज्यादा (172) परमाणु हथियार हैं।



Result Mitra